UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

इतिहास

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

इतिहास (13)

MODEL PAPER (RBSE) 2

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :
1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खंड 'अ'

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (12×1 = 12)

i. निम्नलिखित में से किस स्थान से जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले है? [1]
(अ) बनावली (ब) कालीबंगा
(स) राखीगढ़ी (द) धौलावीरा

ii. भारत में सोने के सिक्के सबसे पहले किस वंश के राजाओं द्वारा जारी किए गए? (मा.शि. बोर्ड, 2013) [1]
(अ) शक (ब) मौर्य
(स) कुषाण (द) वाकाटक

iii. मौर्य वंश को ब्राह्मणीय शास्त्र में किस कुल का माना गया है? [1]
(अ) ब्राह्मण कुल का (ब) क्षत्रिय कुल का
(स) वैश्य कुल का (द) निम्न कुल का

iv. स्त्री संत "करइक्काल अम्मइयार" निम्नलिखित में से किसकी भक्त थी? [1]
(अ) विष्णु (ब) ब्रह्मा
(स) शिव (द) इंद्र

v. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किसने की? [1]
(अ) देवराय प्रथम (ब) हरिहर एवं बुक्का
(स) कृष्णदेव राय (द) सदाशिव राय

vi. विजयनगर साम्राज्य के शासक स्वयं को क्या कहते थे? [1]
(अ) नायक (ब) सम्राट
(स) राय (द) अमीर

vii मुग़ल काल के भारतीय-फ़ारसी स्रोत किसान के लिए किस शब्द का इस्तेमाल करते थे? [1]
(अ) मुज़रियान (ब) रैयत
(स) आसामी (द) उपर्युक्त सभी

viii हुमायूँनामा की रचना किसने की? (मा.शि. बोर्ड, 2016) [1]
(अ) नूरजहाँ (ब) गुलबदन बेगम
(स) जहाँआरा (द) रोशन आरा

ix. "रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ" नामक चित्र किसके द्वारा बनाया गया है? [1]
(अ) टॉमस जोन्स बार्कर (ब) फॉरसिथ
(स) लॉर्ड इरविन (द) हेनरी हार्डिंग

x. "हमारे लिए इससे ज़्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है कि चाँदनी चौक में एक भी मुसलमान नहीं है?" यह कथन किसका था? [1]
(अ) महात्मा गाँधी (ब) बाल गंगाधर तिलक
(स) सुभाष चंद्र बोस (द) मोहम्मद अली जिन्ना

xi. रॉयल इंडियन नेवी (शाही भारतीय नौसेना) के सिपाहियों ने विद्रोह कब किया था? [1]
(अ) 1945 में (ब) 1946 में
(स) 1947 में (द) 1948 में

xii. संविधान सभा के कितने प्रतिशत सदस्य कांग्रेस पार्टी के थे? [1]
(अ) 82 प्रतिशत (ब) 79 प्रतिशत
(स) 71 प्रतिशत (द) 65 प्रतिशत

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो- (प्रत्येक 1 अंक)

i. मौर्य शासकों की राजधानी पाटलिपुत्र का वर्तमान नाम _____है। (मा.शि. बोर्ड, 2014) [1]

ii. _____ ने स्वयं को विष्णु की प्रेयसी मानकर अपनी प्रेम भावना को छंदों में व्यक्त किया। (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [1]

iii. अमेरिका में _____ ईसवी में गृहयुद्ध प्रारम्भ हुआ। [1]

iv. _____ में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। [1]

v. _____ एक्ट द्वारा कार्यपालिका को लगभग पूरी तरीके से विधायिका के प्रति उत्तरदायी बना दिया गया। [1]

3. अति लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 1 अंक)

i. किसी संस्कृति विशेष में रहने वाले लोगों के बीच सामाजिक तथा आर्थिक भिन्नताओं का पता पुरातत्वविद् किस प्रकार से लगाते हैं? [1]

ii. बहिर्विवाह पद्धति किसे कहते हैं? यह अन्तर्विवाह पद्धति से किस प्रकार भिन्न है? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2014) [1]

iii. 'कुल' और 'जात' में क्या भिन्नता है? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2011-2012) [1]

iv. फ्रांस्वा बर्नियर कौन था? (माध्य.शिक्षा बोर्ड, 2016) [1]

v. तमिलनाडु के विष्णु एवं शिव भक्त सन्तों को किस नाम से जाना जाता है? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2012) [1]

vi. महानवमी डिब्बे को किस विदेशी यात्री ने "विजय का भवन" की संज्ञा दी है? [1]

vii. कौनसा किला सफावियों और मुग़लों के बीच झगड़े का कारण था? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [1]

viii. नोआखली वर्तमान में किस देश में स्थित है? (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2015) [1]

ix. स्वतंत्रता पूर्व का 'संयुक्त प्रांत' वर्तमान में कौन-से राज्य के नाम से जाना जाता है? [1]

x. औपनिवेशिक भारत में बम्बई बंदरगाह से निर्यात की जाने वाली महत्वपूर्ण वस्तु कौनसी थी? [1]

xi. 1937 के चुनाव में कितने प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी थी? [1]

xii. "अल्पसंख्यक सब जगह होते है ; उन्हें हम चाह कर भी नहीं हटा सकते"। यह कथन किसका है? [1]

खण्ड-"ब"

लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)

4. महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण किस प्रकार तैयार किया गया? [2]

5. उन्नीसवीं शताब्दी में साँची का पूर्वी तोरण द्वार भोपाल राज्य से बाहर जाने से कैसे बचा रहा? साँची के तोरण पर बने चित्र किस जातक से लिए गए दृश्य है? [2]

6. प्राचीन युग में प्रचलित यज्ञों की परंपरा का वर्णन कीजिए। [2]

7. त्रिपिटक का क्या अर्थ है? [2]

8. बर्नियर के विवरण "एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करते हैं।" स्पष्ट कीजिये। [2]

9. अलबिरूनी ने अपने लिए निर्धारित उद्देश्य में किन अवरोधों की चर्चा की है? [2]

10. विजयनगर साम्राज्य के विभिन्न राजवंशों पर टिप्पणी लिखिए। [2]

11. खुदकाश्त तथा पाहिकाश्त किसान किसे कहा गया? [2]

12. मुग़लकाल में अमील-गुजार के क्या कार्य थे? [2]

13. मुग़ल काल में किन-किन स्थानों का चयन राजधानी के रूप में किया गया ? [2]

14. ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा इस्तमरारी बंदोबस्त को लागू करने के क्या कारण थे? [2]

15. कंपनी द्वारा ज़मींदारों की शक्तियों पर किस प्रकार नियंत्रण स्थापित किया गया? [2]

16. महात्मा गाँधी द्वारा मुहम्मद अली जिन्ना के पाकिस्तान विचार का विरोध करते हुए क्या तर्क दिया गया? (मा. शि. बोर्ड, 2012) [2]

खंड 'स'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)

17. प्राचीन काल में राजाओं द्वारा उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए क्या प्रयास किये गये? [3]

18. धार्मिक विश्वासों और आचरणों की गंगा-जमुनी बनावट या पूजा-प्रणालियों के समन्वय पर प्रकाश डालिये। [3]

19. "1857 के विद्रोह के ढर्रे में समानता, योजना तथा समन्वय था।" स्पष्ट कीजिए। [3]

20. "18वीं शताब्दी के अंत तक भारत में स्थल आधारित साम्राज्यों का स्थान जल आधारित शक्तिशाली यूरोपीय साम्राज्यों ने ले लिया। "व्याख्या कीजिए। (मा. शि. बोर्ड, 2013) [3]

खण्ड-"द"

निबन्धात्मक प्रश्न (प्रत्येक 4 अंक)

21. सिंधु घाटी सभ्यता में गृहस्थापत्य तथा दुर्ग की संरचना पर प्रकाश डालिये। (मा. शि. बोर्ड, 2016) [4]

अथवा

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए? (मा. शि. बोर्ड, 2015)

22. असहयोग आंदोलन के कारणों का मूल्यांकन कीजिए। (मा. शि. बोर्ड, 2015) [4]

अथवा

नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण मुद्दा क्यों बन गया? (मा. शि. बोर्ड, 2016)

23. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को अंकित कीजिए- [5]

(अ) रंगपुर
(ब) मगध
(स) झाँसी
(द) उदयपुर
(य) टोपरा

अथवा

भारत के मानचित्र में निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों को अंकित कीजिए-
(अ) बनावली
(ब) कलिंग
(स) अजमेर
(द) सूरत
(य) कौशल

♦ ♦ ♦

उत्तरमाला मॉडल पेपर – 02

खण्ड-"अ"

1.

i. **[ब]** कालीबंगा
पुरातत्वविदों को कालीबंगन नामक स्थान पर जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है जो आरंभिक हड़प्पा स्तरों से संबंद्ध है। इस खेत में हल रेखाओं के दो समूह एक दूसरे को समकोण पर काटते हुए विद्यमान थे।

ii. **[स]** कुषाण
सोने के सिक्के सबसे पहले प्रथम शताब्दी ईसवी में कुषाण राजाओं ने जारी किए थे। इनके आकार और वजन तत्कालीन रोमन सम्राटों तथा ईरान के पार्थियन शासकों द्वारा जारी सिक्कों के बिल्कुल समान थे।

ii. **[द]** "निम्न" कुल का
मौर्य वंश जिसने एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया उसके उद्भव पर गर्म जोशी से बहस होती रही है। बाद के बौद्ध ग्रंथों में यह इंगित किया गया है कि वे क्षत्रिय थे किंतु ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें 'निम्न' कुल का मानते हैं।

iv. **[स]** शिव
स्त्री संत करइक्काल अम्मयार शिव की भक्त थी। उन्होंने अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु घोर तपस्या का मार्ग अपनाया। नयनार परंपराओं में उनकी रचनाओं को सुरक्षित किया गया है।

v. **[ब]** हरिहर एवं बुक्का ने
परंपरा और अभिलेखीय साक्ष्यों के अनुसार विजयनगर साम्राज्य की स्थापना दो भाइयों- हरिहर और बुक्का द्वारा 1336 में की गई थी।

vi. **[स]** राय
विजयनगर के शासक स्वयं को राय कहते थे। रायों को नरपति या लोगों के स्वामी की संज्ञा दी गई है।

vii. **[द]** उपर्युक्त सभी
मुग़ल काल के भारतीय- फ़ारसी स्रोत किसान के लिए आमतौर पर रैयत या मुज़रियान शब्द का इस्तेमाल करते थे। साथ ही किसान या आसामी जैसे शब्द भी इनके लिए मिलते हैं।

viii. **[ब]** गुलबदन बेगम
हुमायूंनामा की रचना गुलबदन बेगम द्वारा की गई। इसमें मुगलों की घरेलू दुनिया की एक झलक मिलती है। गुलबदन स्वयं तुर्की तथा फ़ारसी में धाराप्रवाह लिख सकती थी इसीलिए अकबर ने उन्हें बाबर और हुमायूं के समय के संस्मरणों को लिपिबद्ध करने का आग्रह किया।

ix. **[अ]** टॉमस जोन्स बार्कर
'रिलीफ ऑफ लखनऊ'नामक चित्र टॉमस जोन्स बार्कर द्वारा 1869 में बनाया गया। यह पेंटिंग कैंपबेल के आगमन के क्षण का जश्न मनाती है।

x. **[अ]** महात्मा गाँधी
28 नवंबर, 1947 को गुरु नानक जयंती के मौके पर गांधीजी गुरुद्वारा शीशगंज में सिखों की एक सभा को संबोधित करने गए तो उन्होंने देखा कि दिल्ली का दिल कहलाने वाले चांदनी चौक की सड़क पर एक भी मुसलमान नहीं था। उसी शाम को अपने भाषण में उन्होंने कहा "हमारे लिए इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है कि चांदनी चौक में एक भी मुसलमान नहीं है?"

xi. **[ब]** 1946 में
1946 की बसंत में बंबई तथा अन्य शहरों में रॉयल इंडियन नेवी(शाही भारतीय नौसेना) के सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। संविधान निर्माण के समय यह विद्रोह लोगों को बार-बार आंदोलित कर रहा था। लोगों की सहानुभूति सिपाहियों के साथ थी।

xii. **[अ]** 82 प्रतिशत
मुस्लिम लीग ने संविधान सभा का बहिष्कार किया। समाजवादी भी संविधान सभा से परे रहे क्योंकि वे उसे अंग्रेजों की बनाई हुई संस्था मानते थे। इन सभी कारणों से संविधान सभा के 82% सदस्य कांग्रेस पार्टी के ही सदस्य थे।

2.

i. पटना
ii. अंडाल
iii. 1861
iv. फरवरी 1922
v. 1935 का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट

3.

i. शवाधान पद्धति तथा उनके द्वारा प्रयोग की गई विलासिता की वस्तुओं द्वारा।

ii. गोत्र से बाहर विवाह करने को बहिर्विवाह पद्धति कहते हैं, परन्तु अन्तर्विवाह समूह (गोत्र, कुल, जाति) के बीच होते हैं।

iii. कुल परिवार को तथा जात बांधवों के बड़े समूह को कहते हैं।

iv. फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिक, दार्शनिक और इतिहासकार था। जिसने "ट्रैवल्स इन द मुग़ल एम्पायर" लिखी।

v. विष्णु भक्त अलवार तथा शिव भक्त नयनार नाम से जाने जाते हैं।

vi. डोमिंगो पेस।

vii. कंधार का किला ।

viii. बांग्लादेश में ।

ix. उत्तर प्रदेश।

x. अफीम।

xi. 8 प्रांतों में ।

xii. "बी. पोकर बहादुर" ने।

खण्ड-"ब"

4. 1919 में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वी.एस. सुकथांकर के नेतृत्व में एक अत्यंत महत्त्वाकांक्षी परियोजना की शुरुआत हुई। आरंभ में देश के विभिन्न भागों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई महाभारत की संस्कृत पांडुलिपियों को एकत्रित किया गया। उन श्लोकों का चयन किया जो लगभग सभी पांडुलिपियों में पाए गए थे और उनका प्रकाशन 13,000 पृष्ठों में फैले अनेक ग्रंथ खंडों में किया। प्रभेदों का संकलन मुख्य पाठ की पाद-टिप्पणियों और परिशिष्टों के रूप में किया गया। इस परियोजना को पूरा करने में सैंतालीस वर्ष लगे।

5. उन्नीसवीं सदी के यूरोपियों में साँची के स्तूप को लेकर काफ़ी दिलचस्पी थी। फ्रांसीसियों ने सबसे अच्छी हालत में बचे साँची के पूर्वी तोरणद्वार को फ्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए शाहजहाँ बेगम से फ्रांस ले जाने की इजाज़त माँगी। कुछ समय के लिए अंग्रेज़ों ने भी ऐसी ही कोशिश की। सौभाग्यवश फ्रांसिसी और अंग्रेज़ दोनों ही बड़ी सावधानी से बनाई "प्लास्टर प्रतिकृतियों" से संतुष्ट हो गए। इस प्रकार मूल कृति भोपाल राज्य में अपनी जगह पर

ही रही। साँची के तोरण पर बने चित्र वेसान्तर जातक से लिए गए दृश्य है।

6. चिंतन, धार्मिक विश्वास और व्यवहार की कई धाराएँ प्राचीन युग से ही चली आ रही थीं। ऋग्वेद अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति का संग्रह है। यज्ञों के समय इन स्रोतों का उच्चारण किया जाता था और लोग मवेशी, बेटे, स्वास्थ्य, लंबी आयु आदि के लिए प्रार्थना करते थे। 1500 से 1000 ईसा पूर्व वैदिक काल में यज्ञ सामूहिक रूप से किए जाते थे। बाद में लगभग 1000 ईसा पूर्व -500 ईसा पूर्व कुछ यज्ञ घरों के मालिकों द्वारा किए जाते थे। राजसूय और अश्वमेध जैसे जटिल यज्ञ सरदार और राजा किया करते थे।

7. बुद्ध की मृत्यु के बाद पाँचवीं-चौथी सदी ई.पू. उनके शिष्यों ने 'ज्येष्ठों' या ज्यादा वरिष्ठ श्रमणों की एक सभा वेसली (बिहार स्थित वैशाली का पालि भाषा में रूप) में बुलाई। वहाँ पर ही उनकी शिक्षाओं का संकलन किया गया। इन संग्रहों को 'त्रिपिटक' अर्थात 'तीन टोकरियाँ' कहा जाता था। पहले उन्हें मौखिक रूप से ही संप्रेषित किया जाता था। बाद में लिखकर विषय और लंबाई के अनुसार वर्गीकरण किया गया।

8. बर्नियर के अनुसार शिल्पकारों के पास अपने उत्पादों को बेहतर बनाने का कोई प्रोत्साहन नहीं था क्योंकि मुनाफे का अधिग्रहण राज्य द्वारा कर लिया जाता था। इसलिए उत्पादन हर जगह पतनोन्मुख था। साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थीं क्योंकि उत्पादों का सोने और चाँदी के बदले निर्यात होता था। वह एक समृद्ध व्यापारिक समुदाय जो लंबी दूरी के विनियम से संलग्न था, के अस्तित्व को भी रेखांकित करता है।

9. अल-बिरुनी कई "अवरोधों" की चर्चा की है जो उसके अनुसार समझ में बाधक थे।

i. पहला अवरोध भाषा थी। उसके अनुसार संस्कृत, अरबी और फारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों और सिद्धांतों को एक भाषा से दूसरी में अनुवादित करना आसान नहीं था।

ii. दूसरा अवरोध धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता थी।

iii. तीसरा अवरोध अभिमान था।

इन समस्याओं की जानकारी होने पर भी, अल-बिरूनी लगभग पूरी तरह से ब्राह्मणों द्वारा रचित कृतियों पर आश्रित रहा। उसने भारतीय समाज को समझने के लिए अकसर वेदों, पुराणों, भगवद्गीता, पतंजलि की कृतियों तथा मनुस्मृति आदि से अंश उद्धृत किए।

10. राजनीति में सत्ता के दावेदारों में शासकीय वंश के सदस्य तथा सैनिक कमांडर शामिल थे।

i. संगम वंश :- पहला राजवंश, जो संगम वंश कहलाता था, ने 1485 तक नियंत्रण रखा।

ii. सुलुव वंश :- संगम वंश को सुलुवों ने उखाड़ फेंका, जो सैनिक कमांडर थे और वे 1503 तक सत्ता में रहे।

iii. तुलुव वंश :- इसके बाद तुलुवों ने उनका स्थान लिया। कृष्णदेव राय तुलुव वंश से ही संबद्ध था।

iv. अराविदु वंश :- 1542 तक केंद्र पर नियंत्रण एक अन्य राजकीय वंश, अराविदु के हाथों में चला गया, जो सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक सत्ता पर काबिज रहे।

11. सत्रहवीं सदी के स्रोत दो किस्म के किसानों की चर्चा करते हैं - खुद-काश्त व पाहि-काश्त।

i. खुद-काश्त :- पहले किस्म के किसान वे थे जो उन्हीं गाँवों में रहते थे जिनमें उनकी ज़मीन थीं।

ii. पाहि-काश्त :- ये वे खेतिहर थे जो दूसरे गाँवों से ठेके पर खेती करने आते थे। लोग अपनी मर्जी से भी पाहि-काश्त बनते थे (मसलन, अगर करों की शर्तें किसी दूसरे गाँव में बेहतर मिलें) और मजबूरन भी (मसलन, अकाल या भुखमरी के बाद आर्थिक परेशानी से)।

12. अमील-गुज़ार राजस्व वसूली करता था। अकबर ने यह हुक्म दिया कि जहाँ उसे (अमील-गुज़ार को) कोशिश करनी चाहिए कि खेतिहर नकद भुगतान करे, वहीं फसलों में भुगतान करे, वहीं फसलों में भुगतान का विकल्प भी खुला रहे। राजस्व निर्धारित करते समय राज्य अपना हिस्सा ज्यादा से ज्यादा रखने की कोशिश करता था।

13.

i. आगरा :- बाबर ने लोदियों की राजधानी आगरा पर अधिकार कर लिया था तथापि चार वर्षों के दौरान राजसी दरबार भिन्न-भिन्न स्थान पर लगाए जाते थे।

ii. फतेहपुर सीकरी :- 1570 के दशक में फतेहपुर सीकरी को एक नयी राजधानी बनाया गया क्योंकि यह अजमेर जाने वाली सीधी सड़क पर स्थित था ।

iii. लाहौर :- 1585 में उत्तर-पश्चिम को और अधिक नियंत्रण में लाने के लिए राजधानी को लाहौर स्थानांतरित कर दिया गया।

iv. शाहजहाँनाबाद :- 1648 में दिल्ली के प्राचीन रिहायशी नगर शाहजहाँनाबाद नयी राजधानी बनी।

14. इस्तमरारी बंदोबस्त लागू करने के कारण :-

i. ब्रिटिश अधिकारी लोग ऐसा सोचते थे कि खेती, व्यापार और राज्य के राजस्व संसाधन सब तभी विकसित किए जा सकेंगे जब कृषि में निवेश को प्रोत्साहन दिया जाएगा और ऐसा तभी किया जा सकेगा जब संपत्ति के अधिकार प्राप्त कर लिए जाएंगे और राजस्व माँग की दरों को स्थायी रूप से तय कर दिया जाएगा।

ii. राज्य (सरकार) की राजस्व माँग स्थायी रूप से निर्धारित कर देने से कंपनी राजस्व की नियमित प्राप्ति की आशा कर सकेगी और उद्यमकर्ता भी अपने पूँजी-निवेश से एक निश्चित लाभ कमाने की उम्मीद रख सकेंगे।

iii. इस प्रक्रिया से छोटे किसानों और धनी भूस्वामियों का एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो जाएगा जिसके पास कृषि में सुधार करने के लिए पूँजी और उद्यम दोनों होंगे।

iv. उन्हें यह भी उम्मीद थी कि ब्रिटिश शासन से पालन-पोषण और प्रोत्साहन पाकर, यह वर्ग कंपनी के प्रति वफ़ादार बना रहेगा।

15. कंपनी द्वारा ज़मींदारों की सैन्य टुकड़ियों को भंग कर दिया गया। ज़मींदारों द्वारा वसूल किया जाना वाला सीमा शुल्क समाप्त कर दिया गया। ज़मींदारों की कचहरियों को कंपनी द्वारा नियुक्त कलेक्टर की देखरेख में रख दिया गया। ज़मींदारों से स्थानीय न्याय और स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति छीन ली गई। कलेक्टर का कार्यालय सत्ता के एक विकल्पी केंद्र के रूप में स्थापित कर दिया। ज़मींदार के अधिकार को पूरी तरह सीमित एवं प्रतिबंधित कर दिया गया।

16. महात्मा गाँधी द्वारा प्रार्थना सभा में भाषण के दौरान यह तर्क दिया कि मैं जानता हूँ कि मेरी स्थिति "बीहड़ में एक आवाज" जैसी है किंतु आज हम कैसे दुखद परिवर्तन देख रहे हैं। मैं फिर वह दिन देखना चाहता हूँ जब हिंदू और मुसलमान आपसी सलाह के बिना कोई काम नहीं करेंगे। मैं दिन-रात इसी आग में जल जा रहा हूँ कि उस दिन को जल्दी से जल्दी साकार करने के लिए क्या करूँ। लीग से मेरी गुजारिश है कि वे किसी भी भारतीय को अपना शत्रु न मानें। हिंदू और

मुसलमान, दोनों एक ही मिट्टी से उपजे हैं। उनका खून एक है, वे एक जैसा भोजन करते हैं, एक ही पानी पीते हैं, और एक ही जबान बोलते हैं।

खण्ड-"स"

17. राजाओं द्वारा उच्च स्थिति प्राप्ति के उपाय :-

i. देवताओं के साथ जुड़ना :- राजाओं के लिए उच्च स्थिति प्राप्त करने का एक साधन विभिन्न देवी-देवताओं के साथ जुड़ना था। मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक शासन करने वाले कुषाण शासकों ने (लगभग प्रथम शताब्दी ई.पू. से प्रथम शताब्दी ई. तक) इस उपाय का सबसे अच्छा उद्धरण प्रस्तुत किया। कुषाण इतिहास की रचना अभिलेखों और साहित्य परंपरा के माध्यम से की गई है। जिस प्रकार के राजधर्म को कुषाण शासकों ने प्रस्तुत करने की इच्छा की उसका सर्वोत्तम प्रमाण उनके सिक्कों और मूर्तियों से प्राप्त होता है।

ii. मूर्तियाँ स्थापित करना :- उत्तर प्रदेश में मथुरा के पास माट के एक देवस्थान पर कुषाण शासकों की विशालकाय मूर्तियाँ लगाई गई थीं। अफ़गानिस्तान के एक देवस्थान पर भी इसी प्रकार की मूर्तियाँ मिली हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इन मूर्तियों के जरिए कुषाण स्वयं को देवतुल्य प्रस्तुत करना चाहते थे।

iii. उपाधियाँ धारण करना :- कई कुषाण शासकों ने अपने नाम के आगे 'देवपुत्र' की उपाधि भी लगाई थी।

iv. प्रशस्तियाँ लिखवाना :- कवियों द्वारा अपने राजा या स्वामी की प्रशंसा में प्रशस्तियाँ भी लिखी जाती थीं। इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण जो स्वयं गुप्त सम्राटों के संभवतः सबसे शक्तिशाली सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि थे, ने संस्कृत में की थी। प्रयाग-प्रशस्ति में लिखा गया है किधरती पर उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। अनेक गुणों और शुभ कार्यों से संपन्न उन्होंने अपने पैर के तलवे से अन्य राजाओं के यश को मिटा दिया है।

18. पूजा प्रणालियों का समन्वय :-

मध्यकाल में कम से कम दो प्रक्रियाएँ कार्यरत थीं :- प्रथम प्रक्रिया में ब्राह्मणीय विचारधारा का प्रचार हुआ। इसका प्रसार पौराणिक ग्रंथों की रचना, संकलन और परिरक्षण द्वारा हुआ। ये ग्रंथ सरल संस्कृत छंदों में थे जो वैदिक विद्या से विहीन स्त्रियों और शूद्रों द्वारा भी ग्राह्य थे।

द्वितीय प्रक्रिया में स्त्री, शूद्रों व अन्य सामाजिक वर्गों की आस्थाओं और आचरणों को ब्राह्मणों द्वारा स्वीकृत किया गया और उसे एक नया रूप प्रदान किया गया। इस प्रक्रिया का सबसे विशिष्ट उदाहरण पुरी, उड़ीसा में मिलता है जहाँ मुख्य देवता को बारहवीं शताब्दी तक आते-आते जगन्नाथ (शाब्दिक अर्थ में संपूर्ण विश्व का स्वामी), विष्णु के एक स्वरूप के रूप में प्रस्तुत किया गया।

देवी की उपासना :- समन्वय के ऐसे उदाहरण देवी संप्रदायों में भी मिलते हैं। देवी की उपासना अधिकतर सिंदूर से पोते गए पत्थर के रूप में ही की जाती थी। इन स्थानीय देवियों को पौराणिक परंपरा के भीतर मुख्य देवताओं की पत्नी के रूप में मान्यता दी गई - कभी वह लक्ष्मी के रूप में विष्णु की पत्नी बनीं और कभी शिव की पत्नी पार्वती के रूप में सामने आईं।

19. "1857 के विद्रोह के ढर्रे में समानता, योजना तथा समन्वय " निम्न बिंदुओं से स्पष्ट हैं :-

i. विद्रोह के ढर्रे में समानता तथा समन्वय :- विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच अच्छा संचार बना हुआ था। जब सातवीं अवध इर्रेग्युलर केवेलरी ने मई की शुरुआत में नए कारतूसों का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया तो उन्होंने 48 नेटिव इन्फेंट्री को लिखा कि "हमने अपने धर्म की रक्षा के लिए यह फैसला लिया है और 48 नेटिव इन्फेंट्री के हुक्म का इंतजार कर रहे हैं।"

ii. बग़ावत के मंसूबे गढ़ना :- सिपाही या उनके संदेशवाहक एक जगह से दूसरी जगह जा रहे थे। लब्बोलुआब ये कि लोग बस बग़ावत के मंसूबे गढ़ रहे थे और उसी के बारे में बात करते थे।

iii. 41वीं नेटिव इन्फेंट्री की दलील :- विद्रोह के दौरान अवध मिलिट्री पुलिस के कैप्टेन हियर्से की सुरक्षा का ज़िम्मा भारतीय सिपाहियों पर था। जहाँ कैप्टेन हियर्से तैनात था वहीं 41वीं नेटिव इन्फेंट्री भी तैनात थी। इन्फेंट्री की दलील थी कि क्योंकि वे अपने तमाम गोरे अफ़सरों को खत्म कर चुके हैं इसलिए अवध मिलिट्री का फ़र्ज बनता है कि या तो वे हियर्से को मौत की नींद सुला दें या उसे गिरफ़्तार करके 41वीं नेटिव इन्फेंट्री के हवाले कर दें। मिलिट्री पुलिस ने दोनों दलीलें ख़ारिज कर दीं। यह तय किया गया कि इस मामले को हल करने के लिए हर रेजीमेंट के देशी अफसरों की एक पंचायत बुलाई जाए।

iv. सामूहिक रूप से फैसले लिए जाना :- इस विद्रोह के शुरुआती इतिहासकारों में से एक, चार्ल्स बॉल ने लिखा है कि ये पंचायतें रात को कानपुर सिपाही लाइनों में जुटती थीं। इसका मतलब है कि सामूहिक रूप से कुछ फैसले ज़रूर लिए जा रहे थे। सिपाही लाइनों में रहते थे और सभी की जीवनशैली एक जैसी थी और क्योंकि उनमें बहुत सारे प्रायः एक ही जाति के होते थे। ये सिपाही अपने विद्रोह के कर्ताधर्ता खुद ही थे।

20. यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों ने मुग़ल काल में ही विभिन्न स्थानों पर आधार स्थापित कर लिए थे : पुर्तगालियों ने 1510 में पणजी में, डचों ने 1605 में मछलीपट्नम में, अंग्रेज़ों ने मद्रास में 1639 में तथा फ्रांसीसियों ने 1673 में पांडिचेरी में।

व्यापारिक गतिविधियों में विस्तार के साथ ही इन व्यापारिक केंद्रों के आस-पास नगर विकसित होने लगे। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक स्थल-आधारित साम्राज्य का स्थान शक्तिशाली जल-आधारित यूरोपीय साम्राज्यों ने ले लिया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, वाणिज्यवाद तथा पूँजीवाद की शक्तियाँ अब समाज के स्वरूप को परिभाषित करने लगी थीं। मध्य-अठारहवीं शताब्दी से परिवर्तन का एक नया चरण आरंभ हुआ।

जब व्यापारिक गतिविधियाँ अन्य स्थानों पर केंद्रित होने लगी तो सत्रहवीं शताब्दी में विकसित हुए सूरत, मछलीपट्नम तथा ढाका पतनोन्मुख हो गए। 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद जैसे-जैसे अंग्रेज़ों ने राजनीतिक नियंत्रण हासिल किया, और इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार फैला, मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई जैसे औपनिवेशिक बंदरगाह शहर तेजी से नयी आर्थिक राजधानियों के रूप में उभरे। ये औपनिवेशिक प्रशासन और सत्ता के केन्द्र भी बन गए। नए भवनों और संस्थानों का विकास हुआ, तथा शहरी स्थानों को नए तरीकों से व्यवस्थित किया गया। नए

रोजगार विकसित हुए और लोग इन औपनिवेशिक शहरों की ओर उमड़ने लगे। लगभग 1800 तक ये जनसंख्या के लिहाज से भारत के विशालतम शहर बन गए थे।

खण्ड-"द"

21. सिंधु घाटी सभ्यता में गृह स्थापत्य की विशेषताएँ :-

i. आँगन पर केंद्रित कमरे :- मोहनजोदड़ो का निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। इनमें से कई एक आँगन पर केंद्रित थे जिसके चारों ओर कमरे बने थे। ये कमरे खाना पकाने और कताई करने के काम आते थें।

ii. एकांतता को महत्व :- लोगों द्वारा अपनी एकांतता को महत्व दिया जाता था। उदाहरणार्थ :-
(1) भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं हैं।
(2) मुख्य द्वार से आंतरिक भाग अथवा आँगन का सीधा अवलोकन नहीं होता है।

iii. स्नानघर :- हर घर का ईंटों के फ़र्श से बना अपना एक स्नानघर होता था जिसकी नालियाँ दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।

iv. बहुमंजिला मकान :- कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने हेतु बनाई गई सीढ़ियों के अवशेष मिले थे, जो इस बात का संकेत है कि मकान बहुमंजिला भी होते थे।

v. कुएँ :- कई आवासों में कुएँ थे जो अधिकांशत: एक ऐसे कक्ष में बनाए गए थे जिसमें बाहर से आया जा सकता था और जिनका प्रयोग संभवत: राहगीरों द्वारा किया जाता था। विद्वानों ने अनुमान लगाया है कि मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग 700 थी।

दुर्ग की संरचना :- दुर्ग में ऐसी संरचनाओं के साक्ष्य मिले हैं जिनका प्रयोग संभवत: विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था। दुर्ग को दीवार से घेरकर निचले शहर से अलग किया गया था। दुर्ग का निर्माण कच्ची ईंटों की चबूतरों पर ऊंचाई पर किया गया था।

I. मालगोदाम :- यह एक ऐसी विशाल संरचना है जिसके ईंटों से बने केवल निचले हिस्से शेष हैं, जबकि ऊपरी हिस्से जो संभवत: लकड़ी से बने थे, बहुत पहले ही नष्ट हो गए थे।

II. विशाल स्नानागार :-

i. मोहनजोदड़ो से आँगन में बना एक आयताकार जलाशय प्राप्त हुआ है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ था।

ii. जलाशय के तल तक जाने के लिए इसके उत्तरी और दक्षिणी भाग में दो सीढ़ियाँ बनी थीं।

iii. जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे के प्रयोग से इसे जलबद्ध किया गया था।

iv. इसके तीनों ओर कक्ष बने हुए थे। इन कक्षों में से एक में बड़ा कुआँ था।

v. जलाशय की सफाई की भी उत्तम व्यवस्था की गई थी। जलाशय से पानी एक बड़े नाले में बह जाता था।

vi. इसके उत्तर में एक गली के दूसरीओर एक अपेक्षाकृत छोटी संरचना थी जिसमें आठ स्नानघर बनाए गए थे। एक गलियारे के दोनों ओर चार-चार स्नानघर बने थे। प्रत्येक स्नानघर से नालियाँ, गलियारे के साथ-साथ बने एक नाले में मिलती थीं।

इस संरचना का अनोखापन तथा दुर्ग क्षेत्र में कई विशिष्ट संरचनाओं के साथ इनके मिलने से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि इसका प्रयोग किसी प्रकार के विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।

अथवा

1900 ईसा पूर्व के बाद हड़प्पाई स्थलों की भौतिक संस्कृति में बदलाव आया। सभ्यता की विशिष्ट पुरावस्तुएँ जैसे बाट, मोहरें विशिष्ट मनके समाप्त हो गए। लेखन तथा लंबी दूरी का व्यापार समाप्त हो गया। शिल्प विशेषज्ञता भी समाप्त हो गई। आवास के निर्माण की तकनीकों का ह्रास हो गया। बड़ी सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण बंद हो गया। सामान्य थोड़ी वस्तुओं के निर्माण लिए थोड़ा ही माल प्रयोग में लाया जाता था। कुल मिलाकर पुरावस्तुएँ तथा बस्तियाँ इन संस्कृतियों में एक ग्रामीण जीवन शैली की ओर संकेत करती है।

हडप्पा सभ्यता के पतन के कारण :-

i. बाढ़ :- जॉन मार्शल, अर्नेस्ट मैके तथा एस. आर. राव आदि विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का विनाश एकमात्र नदी की बाढ़ के कारण हुआ। सैंधव नगर नदियों के तट पर बसे थे जिनमें प्रतिवर्ष बाढ़ आती थी। खुदाई से पता चलता है कि कई बार इन नगरों का पुनर्निर्माण किया गया था। जॉन मार्शल ने मोहनजोदड़ो से, मैके ने चन्हूदडो से तथा राव ने लोथल से बाढ़ से सभ्यता के विनाश के साक्ष्य प्राप्त किए हैं।

ii. जलवायु परिवर्तन :- आर. एल. स्टीन, ए. एन. घोष आदि विद्वानों के अनुसार सभ्यता का विनाश जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ। ईंटों को पकाने, मकानों के निर्माण के लिए जंगलों की कटाई की गई। परिणामस्वरूप पानी बरसना काफ़ी कम हो गया। वर्षा की कमी से कृषि पैदावार घट गई।

iii. भारी जलप्लावन :- भूतत्व वैज्ञानिक एम. आर. साहनी का विचार है कि सैंधव नगरों का विनाश भारी जल प्लावन के कारण।

iv. नदियों द्वारा मार्ग परिवर्तन :- लैम्ब्रिक तथा माधोस्वरूप वत्स सिंधु एवं अन्य नदियों के मार्ग परिवर्तन को इस सभ्यता के विनाश का कारण मानते हैं। वत्स के अनुसार हड़प्पा नगर का विनाश रावी नदी के मार्ग परिवर्तन के कारण हुआ।

v. प्राकृतिक आपदाएँ :- के. यू. आर. कैनेडी ने मोहनजोदड़ो के नर कंकालों का परीक्षण करने के पश्चात यह निष्कर्ष दिया है कि सैंधव निवासी मलेरिया महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हुए। इन आकस्मिक बीमारियों ने उनके जीवन का अंत कर दिया।

vi. आर्थिक दुर्व्यवस्था :- सैंधव नगरों की समृद्धि का मुख्य आधार उनका पश्चिमी एशिया में विशेषकर मेसोपोटामिया के साथ व्यापार था। यह व्यापार 1750 ईसा पूर्व के लगभग अचानक समाप्त हो गया इस कारण सैंधव सभ्यता का नगरीय स्वरूप भी समाप्त हो गया।

vii. बाह्य आक्रमण :- गार्डन चाइल्ड स्टुअर्ट पिगट तथा आर. एम. व्हीलर के अनुसार हड़प्पा सभ्यता के विनाश का कारण बाह्य आक्रमण था।

viii. व्हीलर ने सैंधव सभ्यता की अंतिम तिथि का समर्थन ऋग्वेद के साक्ष्य से किया है। इससे पता चलता है कि इंद्र ने रक्षा प्राचीरों से युक्त नगरों को ध्वस्त कर दिया। जिसके कारण उसे "पुरंदर" कहा गया। मोहनजोदड़ो की खुदाई से पता चलता है कि वहां के निवासियों की अत्यंत निर्दयता पूर्वक हत्या कर दी गई थी।

ix. भूकंप :- एम. आर. साहनी, राइक्स, व डेल्स के अनुसार भूतात्विक परिवर्तन द्वारा हड़प्पा सभ्यता का विनाश हो गया।

x. प्रशासनिक शिथिलता :- कुछ विद्वानों का विचार है कि शासक का अपने अधिकारियों पर नियंत्रण नहीं रहा होगा। एक सुदृढ़ एकीकरण के अभाव में संभवत: हड़प्पा सभ्यता का अंत हो गया होगा।

xi. पारिस्थितिकी असंतुलन :- फेयर सर्विस तथा रफ़ीक मुग़ल के अनुसार पारिस्थितिकी असंतुलन के कारण हड़प्पा सभ्यता का विनाश हो गया। ऐसे साक्ष्य मिले हैं जिनके अनुसार लगभग 1800 ईसा पूर्व तक चोलिस्तान जैसे क्षेत्रों में अधिकांश विकसित हड़प्पा स्थलों को त्याग दिया गया था। इसके साथ गुजरात, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश की नयी बस्तियों में आबादी बढ़ने लगी थी।

22. चंपारन, अहमदाबाद और खेड़ा में की गई पहल से गाँधी जी एक ऐसे राष्ट्रवादी के रूप में उभरे जिनमें गरीबों के लिए गहरी सहानुभूति थी। ये सभी स्थानिक संघर्ष थे।

असहयोग आंदोलन के कारण :-

i. रॉलेट एक्ट के खिलाफ अभियान :- 1914-18 के महान युद्ध के दौरान अंग्रेज़ों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और बिना जाँच के कारावास की अनुमति दे दी थी। विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भी सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर इन कठोर उपायों को जारी रखा गया। इसके जवाब में गाँधी जी ने देशभर में 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ एक अभियान चलाया। उत्तरी और पश्चिमी भारत के कस्बों में चारों तरफ बंद के समर्थन में दुकानों और स्कूलों के बंद होने के कारण जीवन लगभग ठहर सा गया था।

ii. जलियावाला बाग हत्याकांड :- पंजाब में, विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ, जहाँ के बहुत से लोगों ने युद्ध में अंग्रेज़ों के पक्ष में सेवा की थी और अब अपनी सेवा के बदले वे ईनाम की अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन इसकी जगह उन्हें रॉलेट एक्ट दिया गया। पंजाब जाते समय गाँधी जी को कैद कर लिया गया। स्थानीय कांग्रेसजनों को गिरफ़्तार कर लिया गया था। प्रांत की यह स्थिति धीरे-धीरे और तनावपूर्ण हो गई तथा अप्रैल 1919 में अमृतसर में यह खूनखराबे के चरमोत्कर्ष पर ही पहुँच गई। जब एक अंग्रेज़ ब्रिगेडियर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का हुक्म दिया तब जलियाँवाला बाग हत्याकांड के नाम से जाने गए इस हत्याकांड में चार सौ से अधिक लोग मारे गए। रॉलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए।

असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम :- रॉलेट सत्याग्रह की सफलता से उत्साहित होकर गाँधी जी ने अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ 'असहयोग' अभियान की माँग कर दी। जो भारतीय उपनिवेशवाद का खात्मा करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे स्कूलों, कॉलेजों और न्यायालय न जाएँ तथा कर न चुकाएँ। संक्षेप में सभी को अंग्रेज़ी सरकार के साथ (सभी) ऐच्छिक संबंधों के परित्याग का पालन करने को कहा गया।

स्वराज की प्राप्ति :- गाँधी जी ने कहा कि यदि असहयोग का ठीक ढंग से पालन किया जाए तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त कर लेगा।

गाँधी जी द्वारा खिलाफ़त आंदोलन को असहयोग आंदोलन के साथ मिलाना :- अपने संघर्ष का और विस्तार करते हुए उन्होंने खिलाफ़त आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए जो हाल ही में तुर्की शासक कमाल अतातुर्क द्वारा समाप्त किए गए सर्व-इस्लामवाद के प्रतीक खलीफ़ा की पुनर्स्थापना की माँग कर रहा था। गाँधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय- हिंदू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।

असहयोग आंदोलन की प्रगति :-

i. विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया।

ii. वकीलों ने अदालत में जाने से मना कर दिया।

iii. कई कस्बों और नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चला गया।

iv. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 1921 में 396 हड़तालें हुई जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल थे और इससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान हुआ था।

v. देहात भी असंतोष से आंदोलित हो रहा था। उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी। अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए। कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया।

विरोध आंदोलनों द्वारा स्थानीय राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा :- किसानों, श्रमिकों और अन्य ने इसकी अपने ढंग से व्याख्या की तथा औपनिवेशिक शासन के साथ 'असहयोग' के लिए उन्होंने ऊपर से प्राप्त निर्देशों पर टिके रहने के बजाय अपने हितों से मेल खाते तरीकों का इस्तेमाल कर कार्रवाही की।

असहयोग आंदोलन का प्रभाव :- असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक किंतु प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। इसके लिए प्रतिवाद, परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक थे। यह स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था।' 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी राज की नींव हिल गई।

चौरी-चौरा कांड असहयोग आंदोलन का अंत :- फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा की इस कार्यवाही से गाँधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा।

सरकार द्वारा आंदोलन का दमन तथा गाँधी जी गिरफ़्तारी :- असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल

दिया गया। स्वयं गाँधी जी को मार्च 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया गया।

अथवा

'स्वतंत्रता दिवस' मनाए जाने के तुरंत बाद महात्मा गाँधी ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक, जिसने नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया है, को तोड़ने के लिए एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

आंदोलन के आयोजन में नमक एकाधिकार मुद्दे के चयन का कारण :- नमक एकाधिकार के जिस मुद्दे का गाँधी जी ने चयन किया था वह उनकी कुशल समझदारी का एक अन्य उदाहरण था। प्रत्येक भारतीय घर में नमक का प्रयोग अपरिहार्य था लेकिन इसके बावजूद उन्हें घरेलू प्रयोग के लिए भी नमक बनाने से रोका गया और इस तरह उन्हें दुकानों से ऊंचे दाम पर नमक खरीदने के लिए बाध्य किया गया। नमक पर राज्य का एकाधिपत्य बहुत अलोकप्रिय था। इसी को निशाना बनाते हुए गाँधी जी अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ व्यापक असंतोष को संघटित करने की सोच रहे थे। अधिकांश भारतीयों को गाँधी जी की इस चुनौती का महत्व समझ में आ गया था किंतु अंग्रेज़ी राज को नहीं।

नमक यात्रा की पूर्व सूचना :- हालाँकि गाँधी जी ने अपनी 'नमक यात्रा' की पूर्व सूचना वाइसराय लार्ड इर्विन को दे दी थी किंतु इर्विन उनकी इस कार्रवाही के महत्व को न समझ सके।

नमक यात्रा आरंभ :- 12 मार्च 1930 को गाँधी जी ने साबरमती में अपने आश्रम से समुद्र की ओर चलना शुरू किया। तीन हफ्तों बाद वे अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचे। वहाँ उन्होने मुट्ठी भर नमक बनाकर स्वयं को कानून की निगाह में अपराधी बना दिया। इसी बीच देश के अन्य भागों में समान्तर नमक यात्राएँ अयोजित की गई।

आंदोलन का विस्तार :- देश के विशाल भाग में किसानों ने दमनकारी औपनिवेशिक वन कानूनों का उल्लंघन किया जिसके कारण वे और उनके मवेशी उन्हीं जंगलों में नहीं जा सकते थे जहाँ एक जमाने में वे बेरोकटोक घूमते थे। कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गए, वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार कर दिया और विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इनकार कर दिया। 1920-22 की तरह इस बार भी गाँधी जी के आह्वान ने तमाम भारतीय वर्गों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना असंतोष व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।

सरकार द्वारा दमन :- सरकार असंतुष्टों को हिरासत में लेने लगी। नमक सत्याग्रह के सिलसिले में लगभग 60,000 लोगों को गिरफ़्तार किया गया। गिरफ़्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।

नमक यात्रा का महत्व :-

i. महात्मा गाँधी दुनिया की नज़र में आए। इस यात्रा को यूरोप और अमेरिकी प्रेस ने व्यापक कवरेज़ दी।

ii. यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें औरतों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। समाजवादी कार्यकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने गाँधी जी को समझाया कि वे अपने आंदोलनों को पुरुषों तक ही सीमित न रखें। कमलादेवी खुद उन असंख्य औरतों में से एक थीं जिन्होंने नमक या शराब कानूनों का उल्लंघन करते हुए सामूहिक गिरफ़्तारी दी थी।

iii. नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेज़ों को यह अहसास हआ था कि अब उनका राज बहुत दिन नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में "गोल मेज सम्मेलनों" का आयोजन शुरू किया।

गोलमेज सम्मेलन :-

I. प्रथम गोलमेज सम्मेलन :- पहला गोलमेज सम्मेलन नवम्बर 1930 में आयोजित किया गया जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हई।

गाँधी इरविन समझौता :- जनवरी 1931 में गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी कई लंबी बैठकें हुईं। इन्हीं बैठकों के बाद “गाँधी-इर्विन समझौते" पर सहमति बनी जिसकी शर्तों में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेना, सारे कैदियों की रिहाई और तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति देना शामिल था।

II. दूसरा गोलमेज सम्मेलन :- दूसरा गोल मेज सम्मेलन 1931 के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ। उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है।

23.

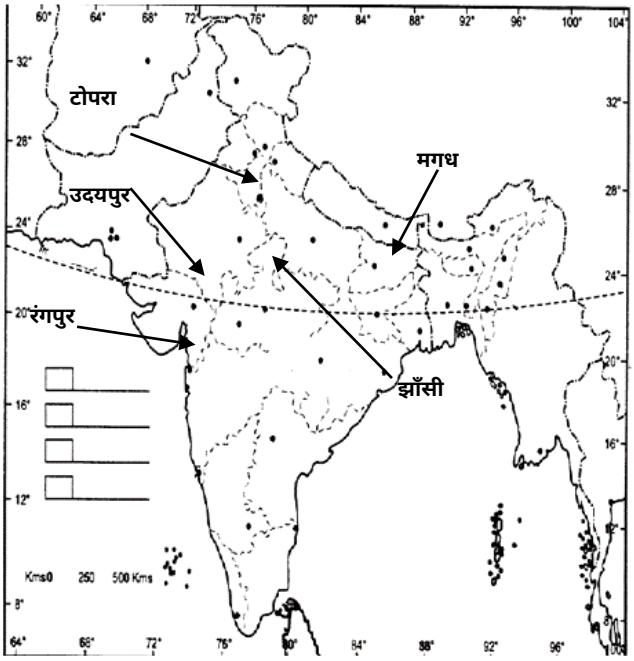

अथवा

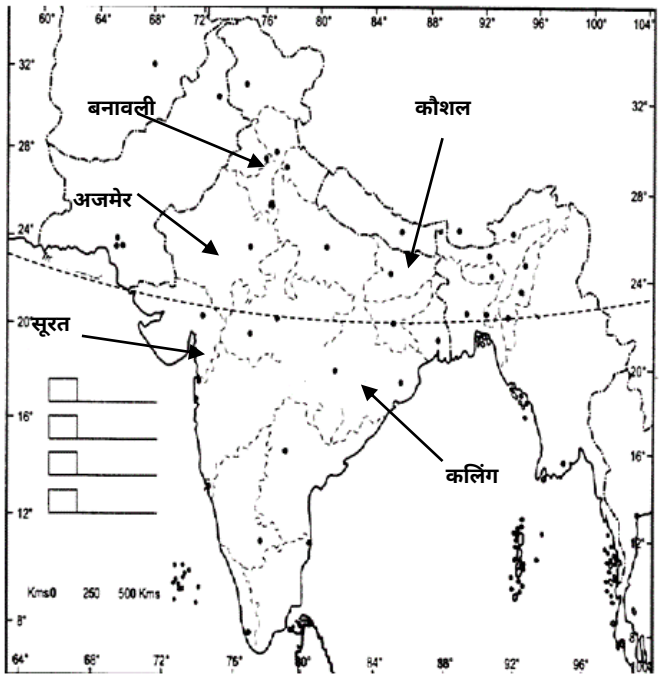

♦ ♦ ♦

UTKARSH CLASSES

UTKARSH
CLASSES

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan कर आज ही 'उत्कर्ष एप' डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE** & Recorded Classes • English & Hindi Medium

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com